CHETANA
International Journal of Education

Impact Factor
SJIF 2021 - 6.169

Peer Reviewed/
Refereed Journal

ISSN-Print-2231-3613
Online-2455-8729

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

Received on 06th Dec. 2021, Revised on 19th Dec. 2021, Accepted 18th Dec. 2021

आलेख

विभिन्न भौगोलिक पर्यावरण के उच्च–माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन

* सुनीता चौहान
शोधार्थी–पीएच.डी.
47, महादेव नगर, रामनगर विस्तार, सोडाला, जयपुर
Email: satishchouhan201085@gmail.com, Mob. No- 9352990098

मुख्य शब्द – *व्यक्तित्व एवं समायोजन, भागौलिक पर्यावरण,वातावरण,गत्यात्मकता आदि।*

सारांश

पर्यावरण में केवल भौतिक तत्वों का ही अध्ययन नहीं किया जाता है बल्कि वातावरण का मनुष्य और मनुष्य का वातावरण पर प्रभाव दोनों का अध्ययन किया जाता है। प्रत्येक व्यक्ति जीवन में समायोजन चाहता है समायोजन व्यक्ति की एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है स्वस्थय व्यक्तित्व स्वस्थय समायोजन का प्रतीक है, समायोजन सहर्ष, सहज हो तथा आडम्बर विहीन हो स्वं को पहचानकर स्वज्ञान पर अपनी आंकाक्षा, अपेक्षा में लगाव देना और विकास की धारा में अपने आपको लीन करना ही स्वास्थय समायोजन है।

प्रस्तावना

विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में प्रगति का यदि जायजा लिया जाये तो यह तथ्य उजागर होते हैं कि विश्व का सभी तरह का विकास अनुसंधानों के कारण ही हुआ है। आज प्रत्येक क्षेत्र में यह अनुभव किया जाता है कि यदि ज्ञान के विस्फोट को समझना है, प्रगति की होड में आगे आना है तो इसके लिए एकमात्र उपयोगी साधन अनुसंधान ही हो सकते हैं अतः इस दृष्टि से शिक्षा मनोविज्ञान, सामाजिक इत्यादि क्षेत्र में अनुसंधान का पक्ष बढा है।

किसी शोध को तब तक पूर्ण नहीं कह सकते हैं जब तक कि वह किसी निष्कर्ष पर न पहुॅचे। निष्कर्ष उन सम्पूर्ण तथ्यों का सार है जिनको अनुसंधान ने विभिन्न अध्ययनों के अन्तर्गत किया है।

एक श्रेष्ठ शोध की मुख्य विशेषता यह है कि उसके निष्कर्ष वस्तुनिष्ठ तथा वैज्ञानिक विधियों द्वारा संग्रहित प्रदत्तों पर आधारित हों। उन पर गोधार्थी की व्यक्तिगत धारणाओं एवं अनुमानों का किंचित मात्र भी प्रभाव नहीं पडता है।

मुख्य का उद्देश्य

विभिन्न भौगोलिक पर्यावरण के उच्च–माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन

प्रस्तुत उद्देश्य प्राप्ति हेतु शोधार्थी द्वारा सामान्य सांख्यिकी में मध्यमान एवं प्रमाणित विचलन को वर्गीकृत प्रदत्तों के माध्यम से एवं 'टी' मान के माध्यम से परिकल्पना की सार्थकता को स्वीकृत या अस्वीकृत किया गया है इस शोधकार्य में अनुसंधान कर्ता अपने व्यापक दृष्टिकोंण तर्क, संगत ,विचार एवं तीक्ष्ण विशलेषण का उपयोग करने हेतु संकलित आकडों के विश्लेंषण एवं विवेचना के आधार पर निष्कर्ष दिये हैं एवं साथ में ही शोधार्थी ने कुछ सुझाव देने का प्रयास किया है।

शोध शीर्षक

विभिन्न भौगोलिक पर्यावरण के उच्च–माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन

समस्या का परिचय

शिक्षा संस्थाओं का वातावरण बालक के व्यक्तित्व को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है क्योंकि विद्यालय बालक के समाजीकरण का विस्तृत स्थल है। अतः शिक्षण संस्था लोकतंत्र का मूर्तवत रूप होना चाहिये। ऐसी शिक्षण संस्थाओं में **सर्वत्र समता के दर्शन हों।** भौगोलिक अध्ययन से ज्ञात होता है कि दो प्रकार के पर्यावरण हैं प्राकृतिक पर्यावरण एवं सांस्कृतिक पर्यावरण। प्राकृतिक पर्यावरण के अर्न्तगत भूमिगत जल, प्राकृतिक जीव, वनस्पतियां, सूक्ष्मजीव आते हैं। सांस्कृतिक पर्यावरण के माध्यम से मनुष्य प्राकृतिक पर्यावरण से अपना सम्बन्ध स्थापित करता है। इसके अन्तर्गत बस्तियां, आर्थिक क्रिया कलाप, धर्म, सामाजिक, राजनैतिक दशाएं आदि आती हैं।

भौतिक पर्यावरण एवं सांस्कृतिक पर्यावरण का प्रत्येक तत्व एक दूसरे से अर्न्तक्रिया करता रहता है। इससे स्पष्ट होता है कि प्राकृतिक पर्यावरण एवं सांस्कृतिक पर्यावरण को अलग–अलग करके नहीं देखा जा सकता।

अतः समायोजन किस प्रकार व्यक्तित्व को प्रभावित करता है समायोजन में ऐसे कौनसे तत्व हैं जिनसे व्यक्ति का व्यक्तित्व प्रभावित होता है तथा समायोजन का एवं व्यक्तित्व के समागम से उसकी उपलब्धियों पर कितना प्रभाव पडता है। व्यक्ति जो कुछ संज्ञान एवं भावनाएँ एवं उजागर करता है। वे उसके गत्यात्मक व्यवहार में क्रियाशील होती है।

क्रियाशीलता एवं गत्यात्मकता ही उसके व्यक्तित्व का दर्पण है।

समायोजन ही जीवन है जीवन ही समायोजन यही जीवन का अर्थ है। अतः इसको जीवन में उतारना इस स्वस्थ्य व्यक्तित्व को निर्माण करना है।

''किसी भी राष्ट्र का निर्माण एक निश्चत भू–भाग और उसमें रहने वाले मनुष्यों से मिलकर होता है, यह निश्चत भू–भाग विभिन्न परिस्थितियों से घिरा होने के कारण विभिन्न भौगोलिक परिस्थितियाँ प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से उस स्थान विशेष के निवासियों के व्यक्तित्व का निर्धारण करती हैं। अतः शिक्षा के साथ–साथ भौगोलिक परिस्थितियों भी बालक के व्यक्तित्व निर्माण में सहायक होती हैं। बालक के इसी व्यक्तित्व निर्धारण से राष्ट्र का व्यक्तित्व उभरता है। अतः निश्चित तौर पर विभिन्न भौगोलिक पर्यावरण में अध्ययन करने वाले बालकों का व्यक्तित्व भी विभिन्नता (विविधता) लिए होता है और यह विभिन्नता भी उस बालक के समायोजन पर प्रभाव डालती है।

समस्या का औचित्य

भारत के मानचित्र पर दृष्टिपात करने से धरातलीय विषमताएं स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती हैं इन विभिन्नताओं में निवास करने वाले लोगों के मानवीय परिवेश में भी विभिन्नताएं स्पष्ट रूप से झलकती हैं। इन विभिन्नताओं के कारण विद्यालयों के परिवेश तथा अध्ययन स्तर पर वहाँ के भौगोलिक पर्यावरण का प्रभाव स्पष्ट झलकता है।

ऐसी स्थिति में शोधकर्ती के मन में सहज ही जिज्ञासा पूर्वक विचार उत्पन्न हुआ हैं कि क्या भौगोलिक पर्यावरण मानव के व्यवहार मे परिवर्तन करता हैं? तथा स्वाभाविक रूप से पर्यावरण में विकास करने वाले विद्यार्थियों की स्मरण शक्ति, कार्य क्षमता आदि

भौगोलिक पर्यावरण से प्रभावित होती हैं ? क्या जलवायु मानवीय व्यवहार में एवं कितनी मात्रा में विभिन्नता उत्पन्न करती हैं ? एवं कहाँ किस भाग विशेष में अधिक मात्रा मे उत्पन्न होती हैं ? क्या किसी क्षेत्र का भौगोलिक पर्यावरण वहॉ के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को प्रभावित करता है ? क्या किसी क्षेत्र का भौगोलिक पर्यावरण वहाँ के विद्याथियों के समायोजनशीलता को प्रभावित करता है ? विविध भौगोलिक पर्यावरण के संदर्भ में क्या लिंग भेद का विद्यार्थियों के समायोजन शीलता पर प्रभाव पड़ता है ?

इस प्रकार की मस्तिष्क विपलव की स्थिति ने ही शोधार्थी को इस विषय पर शोध अध्ययन करने के लिए प्रेरित किया है। विद्यार्थियों के अध्ययन में लिंग भेद, वातावरण, व्यक्तित्व समस्या का प्रभाव पडता है तथा भौगोलिक पारिवारिक वातावरण, उपलब्धि अभिप्रेरणा, संवेगात्मक समायोजन के लिए काफी हद तक जिम्मेदार होता है।

उपरोक्त शोधों के अर्न्तगत शोधार्थी ने देखा है कि अब तक जो शोध कार्य हुए हैं उनमें भौगोलिक पर्यावरण सम्बन्धी शोध तो हुए हैं लेकिन भौगोलिक पर्यावरण विभिन्नता का मानवीय व्यवहारों पर शोध अध्ययन कम ही हो पाये एवं शोध अध्ययन कम न्यादर्शों पर हुए हैं लेकिन इस रूप में शोधार्थी को कोई भी शोध कार्य उपलब्ध नहीं हुआ है इसलिए शोधार्थी का इस विषय पर अध्ययन करना औचित्यपूर्ण रहा है।

समस्या कथन

भौगोलिक विभिन्नताओं के अवलोकन के बाद इस निष्कर्ष पर पहुँचा की समस्या का चयन ''विभिन्न भौगोलिक पर्यावरण के उच्च–माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन'' किया।

शोध के उद्देश्यः–

प्रस्तुत लघु शोध के उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

1. उच्च माध्यमिक विद्यालय स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व पर भौगोलिक परिवेश के प्रभाव का अध्ययनरत करना।
2. उच्च माध्यमिक विद्यालय स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के समायोजन पर भौगोलिक पर्यावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।
3. उच्च माध्यमिक विद्यालय स्तर के छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व पर लिंग भेद का अध्ययन करना।
4. उच्च माध्यमिक विद्यालय स्तर के छात्र–छात्राओं के समायोजन पर लिंग भेद का अध्ययन करना।

❖ **सम्प्रत्यात्मक परिभाषाऐं–** भौगोलिक, पर्यावरण, समायोजन

अध्ययन की परिकल्पना

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधार्थी द्वारा शून्य (नल) परकल्पना का प्रयोग किया गया है।

1. विभिन्न भौगोलिक वातावरण में रहने वाले विद्यार्थियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2. विभिन्न भौगोलिक वातावरण में रहने वाले विद्यार्थियों के समायोजन शीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
3. विभिन्न भागौलिक पर्यावरण में रहने वाले छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व के विभिन्न पहलू में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता।
4. विभिन्न भौगोलिक पर्यावरण में रहने वाले छात्र–छात्राओं के समायोजन शीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता।

प्रयुक्त अध्ययन के चर

❖ **स्वतंत्र चर – (1) भौगोलिक (2) लैंगिक**

❖ **परतंत्र चर –(1) समायोजनशीलता (2)व्यक्तित्व**

प्रस्तुत अध्ययन की जनंसख्या

प्रस्तुत लघुशोध कार्य हेतु जनंसख्या के अंन्तर्गत भरतपुर एवं जयपुर जिलों के उच्च माध्यमिक स्तर वाले विद्यालयों एवं उनमें अध्ययनरत् समस्त विद्यार्थी लिये गये हैं।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध में न्यादर्श के रूप में कुल छात्र 200 लिये गये। न्यादर्श के रूप में भरतपुर जिले से सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालय स्तर एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालय स्तर सभी संकायों के समेकित रूप से छात्र एवं छात्राओं की कुल संख्या 100 ली गयी तथा जयपुर जिले से सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालय स्तर एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालय स्तर के कुल छात्र–छात्राओं की कुल संख्या 100 ली गयी।

निदर्शन विधि

प्रस्तुत लघुशोध में न्यादर्श के लिए विद्यालय एवं छात्र–छात्राओं का चयन ''दैवनिदर्शन विधि'' द्वारा किया गया।

प्रदत्तों के स्त्रोत

भरतपुर जिले से सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालय एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालय तथा जयपुर जिले से सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालय एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालय के अध्ययनरत छात्र छात्राएं प्रदत्तों के स्त्रोत रखे गये हैं।

शोध अध्ययन की विधि

शोध में शोधार्थी द्वारा अध्ययन हेतु '"सर्वेक्षण विधि"' का उपयोग किया।

शोध के उपकरण

प्रस्तुत शोध विषय हेतु निम्न उपकरण उपयोग में लिये गये हैं।

1. किशोर बालक एवं बालिका समायोजन मापनी – **श्रीमति रागनी दुबे सहायक प्रध्यापक मनौविज्ञान विभाग शासकीय गृह विज्ञान महाविद्यालय, होशंगाबाद।**
2. अर्न्तमुखी –बहिर्मुखी परीक्षण (Introversion - Extroversion Test)- By Dr. R.A. Singh

सांख्यिकी

प्रस्तुत शोध मे आवश्यकतानुसाार निम्न सांख्यिकी का प्रयोग किया गया है।

- ★ मध्यमान
- ★ प्रमाणिक विचलन
- ★ टी. अनुपात

शोध प्रक्रिया

1. सम्बन्धित जिलों से उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों की सूची जिला शिक्षाधिकारी से ली गयी।
2. प्राप्त विद्यालयो की सूची के आधार पर विद्यालयों का चयन किया गया।
3. चयनित विद्यालयों के प्रधानाचार्य/निदेशक से सम्पर्क स्थापित किया गया।
4. सम्पर्क स्थापित कर (प्रश्नावली) परीक्षण प्रशासन के लिए निर्धारित तिथि निश्चित की गयी।

5 शोधार्थी द्वारा निर्धारित तिथि पर उपस्थित होकर विद्यालय समय सारणी के अनुसार छात्र छात्राओं पर प्रश्नावली का परीक्षण प्रशासनुसार एवं कक्षानुसार उनके सहयोग से किया गया।

6 परीक्षण के उपरान्त प्रश्नावली का फलांकन करके तालिकाएँ निर्मित की गयी।

7 प्राप्त प्रदत्तों के आधार पर व्याख्या व विश्लेषण किया गया तथा इसके उपरान्त निष्कर्ष प्रतिपादित किये गये।

शोध अध्ययन की परिसीमाएँ

1 भरतपुर जिले एवं जयपुर जिले में स्थित उच्च माध्यमिक विद्यालय स्तर तक ही सीमित रखा गया।

2 इस शोध में समस्त संकायों के विद्यार्थियों को समेकित रूप से लिया गया।

3 शोधार्थी द्वारा क्षेत्रीय स्तर पर भरतपुर जिले एवं जयपुर जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेंत्रो के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालय लिये गये।

4 विद्यालय – राजकीय तथा निजी विद्यालय।

5 कक्षा– 11 वीं कक्षा स्तर तक ही सीमित रखा गया।

6 स्तर – उच्च माध्यमिक स्तर (11वीं) कक्षा के विद्यार्थी

7 लिंग – छात्र– छात्राऐं

शोधकर्ता द्वारा विभिन्न भौगोलिग पर्यावरण के संदर्भ में उपयुक्त विषय के लघुशोध में भरतपुर जिले एवं जयपुर जिले में स्थित उच्च माध्यमिक विद्यालय (11वीं कक्षा) स्तर पर समस्त संकायों के विद्यार्थियों को जो शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों से सम्बन्धित है को समेकित रूप से लिया गया है एवं इस स्तर पर अध्ययन छात्र–छात्राओं तक ही सीमित रखा है।

प्रस्तुत लघुशोध के निष्कर्ष

परिकल्पना 1.1.1– राजस्थान के जिला भरतपुर एवं जिला जयपुर के उच्च माध्यमिक विद्यालय स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के समायोजनशीलता में कोई अन्तर नहीं है।

निष्कर्षः– शोध द्वारा प्राप्त यह निष्कर्ष स्वयं में उचित प्रतीत होता है क्योंकि वर्तमान में शिक्षा के बढते माहोल के कारण वर्तमान प्रतिस्पर्धात्मक युग में विद्यार्थी भिन्न भौगोलिक पर्यावरण में अपने आपको अच्छे तरीके से समायोजित कर लेते हैं, तथा उनमें एक–दूसरे से आगे निकलने की प्रतिस्पर्धा होती है। समय–समय पर अच्छी दिशा में बढ़ने के अत्याधुनिक साधन विकसित हो गये हैं जो विभिन्न भौगोलिक पर्यावरण के प्रभाव को पीछे छोड़ देते हैं। जिसके कारण उन पर भौगोलिक वातावरण का प्रभाव नहीं पडता। जबकि विद्यार्थियों को प्रत्येक भौगोलिक पर्यावरण में शिक्षा के समान अवसर हैं इस कारण वे अपने आपको समायोजित कर लेते हैं। अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि ''राजस्थान के जिला भरतपुर एवं जिला जयपुर के उच्च माध्यमिक विद्यालय स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के समायोजनशीलता में कोई अन्तर नहीं है।'' अतः यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना 1.1.2 – राजस्थान के जिला भरतपुर एवं जिला जयपुर के उच्च माध्यमिक विद्यालय स्तर पर अध्ययनरत छात्रों के समायोजनशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष – ''विभिन्न भौगोलिक पर्यावरण के छात्रों के समायोजनशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। यह परिणाम उच्च माध्यमिक विद्यालयी वातावरण में बदलाव व रूढ़ीवादी समाज की परम्परा को मान्यता न देने से सार्थक साबित हो रही है। छात्र सभी प्रकार के कार्यक्रम में भाग लेते हैं जैसे – रक्तदान, नेत्रदान, सहभागी कार्यक्रम पर्यटन एवं उस परिवेश के साथ सामन्जस्य स्थापित करने का अवसर आदि।

सारांश

व्यक्ति अवसर का दास है, किसी व्यक्ति की शक्ति, कर्मठता, क्षमता और लक्ष्य में सफलता की प्राप्ति ये सब महत्व की वस्तुएँ हैं परन्तु इन सबसे अधिक महत्व की वस्तु हैं परिस्थिति एवं वातावरण का प्रभाव। व्यक्ति परिस्थितियों के वश में होता है और जो स्वयं को परिस्थिति के अनुरूप ढ़ाल लेता है एवं वह स्वयं को अच्छी प्रकार समायोजित कर लेता है तो सफलता उसके कदम चूमती है। वही विजेता कहलाता है। प्रसिद्व विचारक मैथ्यू का यह कथन राजस्थान के संन्दर्भ में एक दम सही साबित होता है प्रकृति गतिहीन और बेकार लोगो से घृणा करती है। वह अवसरों का लाभ उठाकर सफलता अर्जित करने वाले लोगों के अनुरूप स्वयं को ढ़ाल लेती है परिस्थितियाँ चाहे कितनी ही विकट क्यों न हों।

अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है विभिन्न भौगोलिक वातावरण के उच्च माध्यमिक विद्यालय स्तर के छात्रों के समायोजनशीलता में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया अतः यह परिकल्पना स्वीकृत की गयी है।

परिकल्पना 1.1.3– राजस्थान के जिला भरतपुर एवं जिला जयपुर के उच्च माध्यमिक विद्यालय स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं के समायोजनशीलता में कोई अन्तर नही है।

निष्कर्ष – विभिन्न भौगोलिक पर्यावरण की भिन्न–भिन्न परिवार की बालिकाओं में जागरूकता तथा अपने परिवेश के आधार पर दूसरे परिवेश को भी मान्यता देने की जागरूकता है, पहले परम्परागत समाज में बालिकाओं को बालकों की अपेक्षा कम महत्व दिया जाता था, कालान्तर में या यों कहें आजादी के बाद व आजादी के पहले का काल संक्रमण का काल था जब आततायियों से बचने के लिए घर की महिलाओं का सात–सात परदों में रखा जाने लगा था। ऐसे में उनकी शिक्षा और स्वंतत्रा के बारे में सोचना भी परिस्थितिजन्य विवशताओं के कारण असम्भव हो गया था। परन्तु स्वतंत्र भारत में समाज के उत्थान एवं आधुनिक विकास के कारण यह मान्यता समाप्त हो गयी है और छात्राए प्रत्येक क्षेत्र में कौशल दिखा रही हैं तथा सभी क्षेत्रों जैसे– आभियांत्रिकी, वैज्ञानिक, सेना, सौन्दर्यीकरण, खेल, कलाएँ प्रतियोगिताओं में अग्रणी भूमिका निभा रही हैं। तथा वर्तमान परिपेक्ष्य में सभी उच्च पदों को महिला द्वारा ही सुशोभित किया जा रहा है। एवं पदाशीन हैं तथा भारत में ही प्रथम महिला राष्ट्रपति, प्रथम महिला राज्यपाल एवं प्रथम महिला मुख्यमंत्री जैसे सवैधानिक पदों पर पदाशीन हैं।

अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि राजस्थान के जिला भरतपुर एवं जिला जयपुर के उच्च माध्यमिक विद्यालय स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं के समायोजनशीलता में कोई अन्तर नहीं पाया गया। अतः यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती है क्योंकि महिलाओं का योगदान आजादी की लडाई में तो था ही, सामाजिक संघर्ष में भी इन्होने बखूबी अपनी आहूती दी। महिलाओं में वर्ग भेद समाप्त करने, शिक्षा की अलक जगाने राष्ट्र भावना विकसित करने और कुप्रथाओं को समाप्त करने के लिए जो साहस, स्वातन्त्र्य और वैचारिक योग्यता चाहिए थी वह भी इन्हीं महिला नेत्रियों ने पैदा की। राजस्थान को महिलाओं की दृष्टि से सिर उॅचा कर गौरवान्वित होने का होंसला इन्हीं महिलाओं ने दिया। अतः राजस्थान के जयपुर जिले में गधाली क्षेत्र में आदिवासी के उत्थान के लिए श्रीलता स्वामीं नाथन ने जो काम किया इससे आदिवासी महिलाओं ने भी अपने अधिकारों को जाना, इस प्रकार राजस्थान में क्रांति लाने और महिलाओं को जागृत करने में महिलाओं ने सशक्त भूमिका निभाई।

परिकल्पना 1.1.4– राजस्थान के जिला भरतपुर के उच्च माध्यमिक विद्यालय स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के समायोजनशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष– इस परिकल्पना की सार्थकता से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा की समानता के कारण छात्र–छात्राओं के समायोजनशीलता में कोई अन्तर नहीं है। क्योकि एक ही कक्षाकक्ष में विद्यार्थियों के कक्षाध्ययन तथा अन्य पाठ्य सहगामी

क्रियाओं में निःसंकोच भाग लेना तथा पारिवारिक मान्यता समान होना भी इस परिकल्पना की सार्थकता साबित कर रहीं है। जिससे इनकी समायोजन क्षमता प्रभावित नहीं हो रहीं है।

अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि जिला भरतपुर के उच्च माध्यमिक विद्यालय स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के समायोजनशीलता में कोई अन्तर नहीं हैं अतः यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती है क्योंकि स्वंतत्र भारत में शिक्षा के क्षेत्र में एक ही कक्षा में सहशैक्षिणिक अध्यापन को प्राथमिकता दी गयी एवं महिला वर्ग को पुरूष वर्ग के साथ ही हर क्षेत्र में समान पद एवं समान वेतन के नियम का अनुसरण किया गया अतः आज के परिपेक्ष्य में महिलाएँ पुरूषों के साथ हर कार्य को करने में कदम मिलाकर असम्भव कार्य को भी सम्भव कर रहीं हैं अतः लिंग के अनुसार उपलिब्धयों में कम ही असमानता देखने को मिलती है।

परिकल्पना 1.1.5 – राजस्थान के जिला जयपुर के उच्च माध्यमिक विद्यालय स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं की समायोजनशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष– छात्र–छात्राओं की शिक्षा में समानता तथा पुरानी परम्परा एवं मान्यता का अन्त काफी हद तक सार्थक हो रही है। बालिकाएँ अब अपने को बालकों के समान समाज का एक अभिन्न अंग समझ कर अपना विकास कर रही हैं। जिससे समायोजन पर लिंग भेद का प्रभाव नहीं देखने को मिल रहा है।

अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि राजस्थान के जिला जयपुर के उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के समायोजनशीलता में कोई अन्तर नहीं हैं अतः यह परिकल्पना स्वीकृत की गयी है क्योंकि वर्तमान समाज में छात्राएँ, छात्रों की अपेक्षा आत्मनिर्भर की ओर अधिक अग्रसर हैं एवं निम्न पदों से उच्च पदों तक छात्रों की अपेक्षा छात्राएँ भी पहुचने में सफल हो रहीं हैं।

परिकल्पना 1.1.6– राजस्थान के जिला भरतपुर एवं जिला जयपुर के उच्च माध्यमिक विद्यालय स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

निष्कर्षः– प्रारम्भ में भूगोलवेत्ताओं एवं शिक्षाविदों का मानना था, कि भौगोलिक पर्यावरण मानव के व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं। लेकिन शोध निष्कर्ष से स्पष्ट है कि व्यक्तित्व को पर्यावरण प्रभावित नहीं कर सकता। यह अत्याधुनिक विकास और विकास के साधनों के फलस्वरूप हो सका है।

अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि राजस्थान के जिला भरतपुर एवं जिला जयपुर के उच्च माध्यमिक विद्यालय स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अतः यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती है क्योंकि स्वतंत्र भारत में उच्च शिक्षा में लड़कों के साथ–साथ लड़कियों की पहुँच बहुत तेजी से बढ़ रहीं है। और वह इतनी बढ़ गयी है कि उच्च शिक्षा में सलग्न लड़के–लड़कियों के संख्या आज स्विटजरलैण्ड की जनसंख्या से भी अधिक हो गयी है। स्विटजरलैण्ड की जनसंख्या **1 करोड** लगभग है। जबकि हमारे देश में उच्च शिक्षा में संलग्न लड़के–लड़कियों के संख्या 74.18 लाख लगभग हैं पिछले 65 वर्षो में हमने बहुत शीघ्रता से विश्व की उच्च शिक्षा देने वाली दूसरी सबसे बड़ी व्यवस्था स्थापित कर ली है।

परिकल्पना 1.1.7– राजस्थान के जिला भरतपुर एवं जिला जयपुर के उच्च माध्यमिक विद्यालय स्तर पर अध्ययनरत छात्रों के व्यक्तित्व में कोई अन्तर नहीं है।

निष्कर्षः– ''विभिन्न भौगोलिक पर्यावरण के उच्च माध्यमिक विद्यालयी व्यक्तित्व में कोई अन्तर नहीं है।'' उच्च माध्यमिक विद्यालयी स्तर के छात्रों में विभिन्नता होते हुए भी विभिन्न कार्यक्रम (संगोष्ठी, खेलों का आयोजन, समय–समय पर वाद–विवाद) तथा उनकी उपलब्धि परीक्षणों का आयोजन, बालकों को पर्यटन के माध्यम से एक दूसरे स्थान से जोड़ने का कार्य बहुत हद तक सहायक है। विभिन्न स्थानों पर शैक्षिक गोष्ठियों के आयोजन पर भी छात्र अन्य स्थान के छात्र से मिलते रहते हैं। **अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि** राजस्थान के जिला भरतपुर एवं जिला जयपुर के उच्च माध्यमिक

विद्यालय स्तर पर अध्ययनरत छात्रों के व्यक्तित्व में कोई अन्तर नहीं है। अतः यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती है क्योंकि विभिन्न शैक्षिक संगोष्ठीयों एवं सम्मेलनों के आयोजनो से छात्रों के आपस में मिलते रहने से एक क्षेत्र में प्रभावी योजनाओं के बारे में दूसरे क्षेत्र के विभिन्न भौगोलिक वातावरण अध्ययनरत छात्रों को इन योजनाओ का ज्ञान होता रहता है जो कि उसके ज्ञान के विकास में सहायक है। जो कि व्यक्तित्व के विकास का दर्पण है।

परिकल्पना 1.1.8 – राजस्थान के जिला भरतपुर एवं जिला जयपुर के उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं के व्यक्तित्व में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

निष्कर्षः– छात्राओं के व्यक्तित्व पर विभिन्न प्रकार के भौगोलिक पर्यावरण का प्रभाव नगण्य है और यह परिणाम छात्राओं को समानता के अवसर तथा परिवार में बालकों के समान मान्यता के कारण साबित हो रही है। बालिकाएँ पर्यटन, सहभागी कार्यक्रम एवं सामाजिक कार्यक्रम में भाग लेकर अपने व्यक्तित्व में निखार ला रहीं है। परिवार में भी बालिकाओं को अब पहले की मान्यता से हटकर सुविधाएँ प्राप्त हो रहीं है। और यह आज समाज के हर क्षेत्र में अपनी सहभागिता सार्थक सिद्ध कर रहीं हैं।

अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि राजस्थान के जिला भरतपुर एवं जिला जयपुर के उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं के व्यक्तित्व में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अतः यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती है क्योंकि एक पुरानी कहावत है कि एक पुरूष शिक्षित होता है तो एक व्यक्ति शिक्षित होता है, लेकिन एक महिला शिक्षित होती है तो पूरा परिवार शिक्षित होता है, यदि परिवार में महिला शिक्षित होती है, तो पुरूष उससे प्रभावित होगा ही और स्वभाविक है इससे बच्चे विशेष रूप से प्रभावित होगें ही, चूकि बच्चे किसी भी राष्ट्र के भावी जीवन के आधार शिला होते हैं इसलिए कोई राष्ट्र महिला शिक्षा का तवज्जों दे रहा होता है तो वह अपने राष्ट्र के भावी जीवन को भी सुधार रहा होता है।

परिकल्पना 1.1.9 – राजस्थान के जिला भरतपुर के उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

निष्कर्षः– इस परिकल्पना की सार्थकता के कारण एक दृष्टि से एक ही कक्षा कक्ष में एक ही प्रकार की शिक्षा के कारण स्पष्ट हो रही है एवं हमारा पाठ्यक्रम एवं पारिवारिक मान्यता समाज के साथ–साथ आगे बढ़ने की ओर अग्रसर है। जिसमें दोनों की समान सहभागिता सार्थक साबित हो रही है। क्योंकि समाज अब बालक–बालिकाओं में अन्तर नहीं रखता है, अतः छात्र–छात्राओं में समान प्रकार की प्रतिस्पद्वा एवं व्यक्तित्व का विकास हो रहा है। अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि राजस्थान के जिला भरतपुर के उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अतः यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती है क्योंकि मनुष्य की मानसिक शक्ति के विस्तार हेतु शिक्षा एक अनिवार्य प्रक्रिया है। स्त्री हो या पुरूष किसी को शिक्षा से वंचित रखना उसकी मानसिक क्षमता विकसित होने से रोक देना है, पूर्ण और सूचारू शिक्षा न मिलने से या मानसिक क्षमता विकसित न होने से महिला भार के दायित्वपूर्ण कार्यों का भार उठाने में असमर्थ होती है। अपने बच्चों का पथ प्रदर्शन भी प्रभावशाली ढंग से नही कर पाती, शिक्षा के माध्यम से महिला जो ज्ञान, कौशल, जीवन मूल्य और दृष्टिकोंण हासिल करती है उससे जीवन में मनचाही गुणवत्ता ला सकती है। अतः शिक्षा महिला स्वाभिमान की भावना जगाती है और उनके कार्य क्षेत्र का सीमा का विस्तार करती है। आज की परिपेक्ष्य में महिला उत्थान के संदर्भ में माता का नाम भी छात्र–छात्राओं के प्रमाण–पत्रों में लिखने की मान्यता रखी गयी है एवं महिला वर्ग के उत्थान के लिए महिला के नाम से जमीन पंजीकरण कराने हेतु राज्य सरकार द्वारा भी आंशिक छूट दी गयी है। अतः व्यक्तित्व के निर्माण में भौगोलिक वातावरण का प्रभाव नहीं होता है।

परिकल्पना 1.1.10– राजस्थान के जिला जयपुर के उच्च माध्यमिक विद्यालय स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

निष्कर्षः– आज के भौगोलिक पर्यावरण में लिंग भेद का प्रभाव समाप्त है तथा बालिकाओं को सामाजिक एवं सरकारी मान्यता के आधार पर पुरानी मान्यता नगण्य सिद्व हो रही है। यह आधुनिक विकास समाज का विकास, वैज्ञानिक ढ़ंग से कार्यों का संचालन एवं रहन–सहन में विकास के साथ बदलाव के कारण हो रहा है। नारी हर तरह के क्षेत्र में अपने को बालकों के समान हिस्सेदार बनकर रहना चाहती है। इन्हीं कारणों पर दृष्टि पात करें तो बालक–बालिका के व्यक्तित्व में अब सार्थक अन्तर देखने को नहीं मिलता है। अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि राजस्थान के जिला जयपुर के उच्च माध्यमिक विद्यालय स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अतः यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती है क्योंकि आज नारी हर असम्भव काम को करने में सक्षम साबित हो रही है एवं इस तरह लड़कियों एवं महिलाओं को शिक्षित करना अपने आप में एक महत्वपूर्ण पहलू है महिला शिक्षा को पहचानते हुए ही स्वतंत्रा के पश्चात् से ही महिलाओं के लिए शिक्षा के अवसर उपलब्ध कराना हमारे राष्ट्रीय प्रयासो मे एक महत्वपूर्ण अंग रहा है, महिला शिक्षा के विस्तार के लिए अनेक कार्यक्रम योजना शुरू की गयी जिनके परिणाम स्वरूप वर्तमान सामाजिक ढ़ांचे में बदलाव आया और हर व्यवसाय में छात्राओं ने छात्रों की अपेक्षा उल्लेखनीय स्थान ग्रहण किया और अपनी प्रतिभा के लिए ख्याती प्राप्त की।

भावी शोध हेतु सुझाव एवं निहितार्थ

प्रस्तुत अध्ययन सीमित समय में सीमित विद्यार्थियों पर किया गया है। यह अध्ययन विशाल समूहों पर किया जा सकता है।

1. यह अध्ययन राजस्थान के जिला भरतपुर एवं जिला जयपुर के उच्च माध्यमिक विद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों पर किया गया है। यह स्कूलों एवं विश्वविद्यालय स्तर के विद्यार्थियों पर किया जा सकता है।
2. प्रस्तुत अध्ययन केवल दो भौगोलिक पर्यावरण में व 200 विद्यार्थियों पर किया गया है। यह अध्ययन और अधिक भौगोलिक पर्यावरण में व अधिक विद्यार्थियों पर किया जा सकता है।
3. यह अध्ययन गैर सरकारी व सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों पर किया गया है। यह अध्ययन सरकारी व गैर सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियो पर पृथक–पृथक भी किया जा सकता है।
4. प्रस्तुत अध्ययन में केवल समायोजन एवं व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। यह अध्ययन समायोजन, व्यक्तित्व, बुद्धिलब्धि एवं सहशिक्षा का तुलनात्मक अध्ययन के रूप में किया जा सकता है।
5. इस अध्ययन में विद्यार्थियों के विचारों का अध्ययन किया गया है। यह अध्ययन शिक्षक तथा परिवार के मुखिया के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन के रूप में भी किया जा सकता है।
6. यह अध्ययन उच्च माध्यमिक विद्यालय स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों पर किया गया है। यह अध्ययन विद्यालयों तथा उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं पर किया जा सकता है।
7. यह अध्ययन केवल दो जिलों के उच्च माध्यमिक विद्यालयों पर किया गया है। यह अध्ययन राजस्थान के सम्पूर्ण जिलों के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों पर भी किया जा सकता है।
8. यह अध्ययन राजस्थान के दो जिलों के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों पर किया गया है। यह अध्ययन अन्य राज्यों के उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों पर किया जा सकता है।
9. यह अध्ययन सम्पूर्ण राजस्थान एवं अन्य राज्यों से भौगोलिक संदर्भ में अध्ययन कर सकते है। प्रस्तुत अध्ययन का न्यादर्श 200 विद्यार्थियों पर है। यह अध्ययन अधिक न्यादर्श पर भी हो सकता है।
10. यह अध्ययन केवल सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर किया गया है तथा यह अध्ययन सरकारी एवं गैर सरकारी महाविद्यालय स्तर के विद्यार्थियों पर भी किया जा सकता है।
11. यह अध्ययन एक ही भौगोलिक पर्यावरण में अधिक न्यादर्श पर किया जा सकता है

12. यह अध्ययन 11वी. कक्षा पर किया गया है तथा यह माध्यमिक स्तर पर किया जा सकता है। यह अध्ययन पारिवारिक आधार पर भी किया जा सकता है।
13. यह अध्ययन केवल उच्च माध्यमिक विद्यालय स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राएं जो कि जिला जयपुर एवं जिला भरतपुर से सम्बन्धित हैं। तथा यह अध्ययन अन्य जिलों के सम्बन्धित महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालय पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं पर भी किया जा सकता है।
14. यह अध्ययन जिला जयपुर एवं जिला भरतपुर के उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं पर किया गया है तथा इस संदर्भ में शोध इन्हीं जिलों से संलग्न विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय स्तर के विद्यार्थियों पर भी किया जा सकता है।
15. यह अध्ययन केवल भारत के एक राज्य राजस्थान के दो जिलों में उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं पर किया गया है जबकि यह अध्ययन विदेशों में अध्ययनरत इसी स्तर के छात्रों पर कर सकते है।
16. यह अध्ययन केवल उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी जो कि समेकित रूप से सभी सकायों के विद्यार्थियों पर किया गया है। तथा यह अध्ययन पृथक–पृथक संकायों के इसी स्तर के विद्यार्थियों पर किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. आहुजा, राम (2005),''सामाजिक सर्वेक्षण एवं अनुसंधान'', रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
2. भटनागर, आर.पी. एवं भटनागर, मीनाक्षी(2005),''शिक्षा अनुसंधान'', लॉयल बुक डिपो, मेरठ।
3. बनर्जी, रमेश चन्द (2005),''मौसम विज्ञान,'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, तिलक नगर, जयपुर।
4. अस्थाना, विपिन(1997),''मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन,'' विनोद पुस्तक भण्डार
5. गौतम अलका ''जलवायु एवं समुद्र विज्ञान,''रस्तोगी पब्लिकेशनस् शिवाजी रोड, मेरठ।

अन्य पत्र–पत्रिकाएँ

1. सैनी अभिषेक, निर्झर 2007–08, ''अध्यापक का व्यक्तित्व'' गवरमेन्ट सर्वोदय बाल विद्यालय बी.– (ए. एच.) ब्लॉक शालीमार बाग देहली।
2. पूषन्–''छात्राओं के व्यक्तित्व में नैतिक शिक्षा का योगदान'' राजकीय वरीष्ठ माध्यमिक बालिका विद्यालय बी.– (ए. एच.) ब्लॉक शालीमार बाग देहली।
3. वत्स दीपक कुमार ''शिक्षक, शिक्षार्थी और शिक्षा के बदलते संदर्भ, प्रतियोगिता दर्पण/ अगस्त/2000/147.
4. गोस्वामी सुधा, भारत वर्ष की चर्चित महिलाएं प्रतियोगिता दर्पण/ नवम्बर 1999/650.

Corresponding Author
सुनीता चौहान
शोधार्थी–पीएच.डी.
47, महादेव नगर, रामनगर विस्तार, सोडाला, जयपुर
Email: satishchouhan201085@gmail.com, Mob. No- 9352990098